International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्तराम बी.ए. के लेखन में राष्ट्र-भाषा, राष्ट्र-जन एवं राष्ट का उद्घोष गान

कंवल कशोर,
शोधार्थी,
बाबा मस्तनाथ वश्व वद्यालय, रोहतक
पंजीकरण संख्या:- **17-BMU-6385**

सन्तराम बी.ए. ने केवल स्वयं-पोषण हेतु साहित्यालेखन नहीं कया था और न ही वे चंद सक्के कमाने जी स्वार्थी लालसा के लए साहित्यकार बने थे प्रत्युत उन्होंने निज मेधा, प्रज्ञा एवं कर्मणा को राष्ट्र, समाज एवं मानव-मात्र के अभ्युदय एवं निर्माण हेतु सम्पूर्णतः सम र्पत कर अपनी महीयस उद्देश्य मनस्विता का परिचय दिया था। उनकी मातृभाषा पंजाबी थी और वद्यालयी औपचारिक शक्षण में उन्होंने उर्दू, फ़ारसी, अरबी, अंग्रेजी सीखी थी, परन्तु सदैव से वे राष्ट्रवादिता की उज्ज्वल धारा के ऐसे प्रवाह में प्ला वत हुए क उन्होंने इन तमाम भाषाओं के मोह को छोड़कर तथा उनके लए नितांत नई नवेली भाषा हिंदी को सहर्ष अपना लया। वे हिंदी के केवल कुछ चयनित, मानित लेखकों के साहित्य का रस लेने हेतु इधर नहीं आए थे बल्कि उस समय के आर्यसमाज की सामाजिक व देश-हितैषी सरग र्मयों एवं गति व धयों की प्रेरणा से प्रभा वत-मोहित होकर उन्होंने हिंदी में प्रफुल्लता से प्र वष्टि की थी। सन्तराम बी.ए. अपने आत्म-परिचय ग्रंथ 'मेरे जीवन के अनुभव में उक्त तथ्य को निम्न ल खत टिप्पणी द्वारा स्वयं सद्ध कर देते हैं, यथा, "मैंने यह कहा क मैंने तुलसीदास और सूरदास की क वता का रसास्वादन करने के लए हिंदी को नहीं अपनाया। मैं राष्ट्र की एकता चाहता हूँ। भारत में हिंदी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है। भारत के कसी एक छोर से दूसरे छोर को चले जाइये। आपको अवश्य बहुत बड़े हिंदी प्रदेश में से होकर जाना पड़ेगा। इस भाषा को बोलने और समझने वाले जितने लोग हैं उतने भारत की कसी दूसरी आंच लक बोली के नहीं।"[i]

अपने सतत अध्ययन, अनुभवों एवं चंतन द्वारा प्राप्त सारतत्व की आधार-भू म पर उनका निःसंशय मानना था क सम्पूर्ण भारतवर्ष को एकता के सूत्र में बांध देने की अटूट व अखण्ड शक्ति केवल हिंदी जैसी सुष्ठु, सु वस्तारित एवं समृद्ध भाषा में ही है और यह भाषा इस देश की स्वतंत्रता व अखंडता के लए भी अति-आवश्यक व सुदृढ़ कारक की भू मका निभा सकती है। यही बात पूर्व में स्वामी दयानंद व महात्मा गांधी आदि प्रभृति धा र्मक-सांस्कृतिक व राजनीतिक नेताओं ने भी भन्न- भन्न मंचों पर समय-समय पर अपने स्वोद्गारों एवं उवाचों में पूर्ण निष्ठा से कही थी। सन्तराम बी.ए. ने हिंदी में लखने की प्रेरणा के रूप में महात्मा गांधी व स्वामी दयानंद सरस्वती को ही चुना और उन्ही का उदाहरण सामने रखते हुए

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उन्होंने वचार व्यक्त करते हुए कहा था क जब ये दोनों गुजराती होते हुए अपनी जन्म-भाषा गुजराती को पार्श्व में रखकर देशोत्थान के नि मत हिंदी को अपना सकते हैं तो हमें भी अपनी मातृ-बो लयों की जगह हिंदी को अपनाकर सम्पूर्ण राष्ट्र में एक ही मातृभाषा अर्थात हिंदी का प्रचार व प्रसार करना चाहिए। सन्तराम बी.ए. उत्तरोक्त महानुभावों के हिंदी अनुराग व इसके प्रति उनकी आस्था को निम्न ल खत टिप्पणी द्वारा संद र्भत कर देते हैं तथा उनके नक्शे-कदम को स्वयं अपनाने के तथ्य को आधार प्रदान करते हैं, अस्तु, "वे इतनी महान वभूति थे क यदि वे 'सत्यार्थ प्रकाश' गुजराती भाषा में लखते तो मेरे जैसे सहस्रों-लाखों श्रद्धालु ववश होकर गुजराती सीखते।

ऋ ष दयानद के बाद हम महात्मा गांधी को देखते हैं। उनका जन्म भी कसी हिंदी प्रान्त का नहीं, काठियावाड़ गुजरात का ही था। अंग्रेजी पर उनको मातृभाषा के समान अ धकार था। पर वे सदा हिंदी में ही बोलते और प्रचार करते थे।"[ii]

अपनी इस आकांक्षा व उद्देश्य के लए सन्तराम बी.ए. ने जीवनपर्यंत संघर्ष कया व कठोर उद्यम से हिंदी को सम्पूर्ण देश में स्था पत करने व करवाने का भागीरथ प्रयास कया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें 19 जुलाई सन् 1958 को 'राष्ट्रभाषा प्रचार स मति-वर्धा' ने प्रशस्ति-पत्र व नकद इनाम देकर सम्मानित कया था। वो राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के क र समर्थक थे इसी लए भोपाल में सम्मानित होते समय उन्होंने अपने भाषण में कहा था, "दूसरी बात मैंने यह कही क क्षेत्रीय भाषाओं का उन्माद राष्ट्र को ले डूबेगा। यदि पंजाबी मेरी मातृभाषा है तो इसका अर्थ यह है क पंजाब मेरी माँ है। यदि बांग्ला बंगा लयों की, गुजराती गुजरातियों की और मराठी मराठों की मातृभाषा है तो बंगाल, गुजरात और महाराष्ट्र को उनकी माँ मानना आवश्यक है। ऐसी अवस्था में यह प्रश्न होगा क यह भारत-माता कसकी माँ है? क्या यह निपूती है? बोली के आधार पर अलग-अलग होने की यह कुनीति हमें ले डूबेगी, भारत की एकता नष्ट हो जाएगी।"[iii]

सन्तराम बी.ए. भारत के प्रत्येक व्यक्ति को आदर्शात्मक स्वतंत्र नागरिक के रूप में देखना चाहते थे अर्थात व्यक्ति सम्पूर्णतः स्वतंत्र हो परन्तु देश व देश के वधान की मर्यादा का पालन ईमानदारी व जज्बे के साथ करने वाला हो। इसी मन्तव्य से उन्होंने न केवल वपुल साहित्य रचा अ पतु उनके प्रत्येक वक्तव्य का मूल सार भी यही होता था। शैशव से ही देश के नागरिकों का उत्तम फलन व मान सक पोषण हो इस लए उन्होंने हमारे बच्चे, सुशील कन्या, स्काउट बच्चों की कहानियाँ, हमारे महापुरुष, वश्व की महान वभूतियाँ आदि महत्वपूर्ण व प्रेरक पुस्तकों की सृजना की। सन्तराम बी.ए. छात्रों के चारित्रिक, बौ द्धक, मान सक, सामाजिक, सांस्कृतिक इत्यादि समस्त प्रकार के वकास की सम्पूर्ण परिणति चाहते थे। अतः उनकी चंतना में ये वचार प्रामुख्य में था क कसी भी राष्ट्र की अस्मिता, गौरव, उन्नति एवं सुदृढ़ता उस देश की भावी संततियों की उत्कृष्ट शक्षा-दीक्षा व उत्तम लालन-पालन में होती है, इस लए इस संदर्भ में यहाँ उनका यह

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वक्तव्य अत्यंत प्रासं गक व अत्युपयुक्त है, " कसी देश के सभ्य या असभ्य होने की पहचान ही यह है क वह अपने बालकों की शक्षा को कतना महत्व देता है। हमें ऐसा यत्न करना चाहिए जिस से हमारी संतान के शरीर और मन हमारी अपेक्षा अ धक ब लष्ठ और सुसंस्कृत हों। यदि हमारी अगली पीढ़ी प्रत्येक बात में हमसे बढ़िया न हो तो समझो क हम ने अपने कर्तव्य का ठीक-ठीक पालन नहीं कया।"[iv]

सन्तराम बी.ए. के लेखन में ऐसे अनेक सूक्ति-परक वचन व उपर्युक्य सभी वषयों के वचार-सन्दर्भ यत्र-तत्र बिखरे मा णक-मूंगों की तरह प्रभा सत होते प्रचुरता में मल जाते हैं।

समाज के वषय में भी सन्तराम बी.ए. का दृष्टिकोण पूर्णतः खुला व दीर्घ-हृदयी था। वे समाज को स्वतंत्र, सौहार्दपूर्ण, स्वावलम्बी, श क्षत व एकनिष्ठ देखना चाहते थे इस लए उन्होंने समाजोत्थान सम्बन्धी अनेक पुस्तकों का प्रणयन कया। समाज में फैली धा र्मक आडम्बर की कलुषता, जातीय वद्वेष, पक्षपातपूर्ण वर्णव्यवस्था, संस्कारों की कमी आदि को वे भली-भाँति देख, परख व समझ रहे थे इसी लए इन दोषों को मटाने हेतु लेखकीय व धरातलीय सब प्रकार के प्रयासों द्वारा इन्हें समूलतः नेस्तनाबूद करने की सम्पूर्ण चेष्टा की। सन्तराम बी.ए. द्वारा उनकी अपनी पुस्तक 'हमारा समाज' में ल खत यह टिप्पणी उक्त सन्दर्भ को व्याख्यायित करने में सम्पूर्णतः सफल सद्ध होती है, अस्तु, "समाज-शास्त्र का नियम है क जब दो मनुष्य आपस में खान-पान और शादी-ब्याह करने से इंकार करते हैं तो उनमें एक-दूसरे को ऊँचा-नीचा समझने का भाव उत्पन्न हो जाता है। इस कुत्सित भाव के जाग्रत होते ही उनकी बन्धुता और एकता नष्ट होकर फूट का प्रादुर्भाव हो जाता है।"[v]

जातीय वद्वेष से उन्हें वशेष जुगुप्सा थी इस लए उन्होंने इसे समूलतः मटाने हेतु सन् 1922 में सुप्र सद्ध स्वतंत्रता सेनानी भाई परमानन्द की अध्यक्षता में 'जात-पाँत-तोड़क मंडल' के रूप में एक बहुत ही क्रांतिकारी व मजबूत संगठन बनाया, व स्वयं इसका महत कार्यकारी 'महास चव' का पद सम्हाला, तथा इस संगठन ने अपने समय में खुद के जातीय-उत्पीड़न वरोधी कार्यों से पूरे देश में तहलका मचा दिया था। इसी मंडल के सन् 1936 के राष्ट्रीय अ धवेशन में बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का जाति-भेद व उसके निवारण पर अध्यक्षीय भाषण प्रस्ता वत था, जो अपरिहार्य कारणों से क्रयान्वित नहीं हो सका परन्तु सन्तराम बी.ए. के अनुरोध व समय की नजाकत को ताड़कर बाबा साहब ने उसे 'Annihilation of Caste' अर्थात 'जातिभेद का उच्छेद' नाम से पुस्तक रूप में प्रका शत करवा दिया। यह एक युगान्तकारी व जातीय घृणा और वभेद को मटाने के लए वप्लवकारी एवं क्रांति-चेता पुस्तक प्रमा णत हुई थी।

सन्तराम बी.ए. देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था के पुरजौर व अ डग समर्थक थे। उन्होंने जातीय भेद को इस लोकतांत्रिक-व्यवस्था का सबसे बड़ा शत्रु माना। लोकतंत्र के लए कसी तरह का भेदभाव बेहद घातक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

होता है पर हमारे देश में तो ये सदियों से चला आ रहा था इस लए अब समय आ गया था क इस भयानक व क्रूर जातीय वभेद की जा लम प्रथा को समस्ततः समाप्त कर देश में समता, स्वतन्त्रता, बंधुत्व, व समवायी व्यवस्था को स्था पत कया जाए। इसी व्यवस्था के लए सन्तराम बी.ए. सदा लड़े भी, अड़े भी और साहित्यिक मंच को इसी प्रकार के साहित्य से अपनी तरफ से अटा भी दिया। यद्य प सन्तराम बी.ए. राजनीति पर कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं रचा परन्तु उनके प्रभृति लेखों, संस्मरणों, निबंधों तथा पुस्तकों में उनमें राजनीतिक वचारों की ज्ञप्ति हो जाती है। 'हमारा समाज' व 'सेवा-कुंज' पुस्तक में तो उन्होंने उद्धरणों सहित राजनीति और उसके आकर-प्रकार व जरूरत पर खूब लखा है। उनकी राजनीतिक बौ द्धकता द कयानूसी, पौरा णक व अता र्कक नहीं है, वरन् आधुनिक, प्रामा णक व वमर्श से सम्पन्न है। वे लोकतांत्रिक को सर्वोत्तम राज्य प्रणाली स्वीकारते थे परन्तु इसके उच्छृंखल हो जाने के खतरों से भी पूर्णतः वा कफ थे इस लए उन्होंने लोकतंत्र के ऐसे परिमार्जित आदर्श व गरिमा की कामना की है, जो श क्षत व जिम्मेदार नागरिकों की उत्तम सोच पर ही निर्भर करता है तथा साथ ही वे लोगों से इसमें सुरु च एवं लगाव से प्रवृत्त होने की कामना भी करते हैं। लोकतंत्र एवं उससे लोक की सम्बद्धता के प्रश्न पर उनकी यह टिप्पणी अत्यंत सारग र्भत है, "बहुत से राष्ट्रों का भारी अनिष्ट बहुदा इस कारण हो जाया करता है क्यों क लोग अपनी सरकार में यथेष्ट दिलचस्पी नहीं लेते। जनता की उदासीनता राजकर्मचारियों में भ्रष्टता उत्पन्न करती है। लोकतंत्र द्वारा जनता को दिए गए अ धकारों का उपयोग न करने से सर्वशक्ति सम्पन्न अ धनायक तंत्र शीघ्रता से उत्पन्न होने लगता है। यदि अच्छे लोग सामूहिक रूप से राजनीति के क्षेत्र से निकल जाते हैं तो स्वार्थी, भ्रष्टाचारी, उत्पीड़क अल्प संख्या राज्य की बड़ी भारी शक्ति को ह थया लेती है और सारे राष्ट्र को दुःख का मुँह देखना पड़ता है।"[vi]

शक्षा, संस्कार व देश प्रेम की भावना की अल्पता में बहुत से देश अपनी लोकतांत्रिक प्रणाली को अक्षुण्ण नहीं रख पाए और अंततः एक असफल राष्ट्र की वभी षका में वलीन हो गए।

भारत अपने सांस्कृतिक उत्थान पर गर्व कर सकता है, परन्तु इस सैद्धांतिक व शास्त्रीय आदर्श का उ चत व सामयिक प्रयोग इसे बो झल व निरर्थक बना सकता है इस लए सावधानी, परीक्षण व आवश्यकता के त्रिआयामी प्रक्षालन से गुजारकर ही इन आदर्शों का प्रयोग कया जाना सुनिश्चित करना चाहिए। बड़े-बड़े सूक्तों का फलन तभी सम्भव है जब जन-सरोकारों से उनका तारतम्य बैठे और लोकहित की परंपरा को त्वरा प्रदान करें। संतराम बी.ए. ने अपने लेखन में इस आवश्यकता का पूरा ध्यान रखा है। राष्ट्र, राष्ट्र-जन तथा राष्ट्र-भाषा की त्रिवेणी न केवल उनके व्यवहार में प्रवाहित थी अ पतु उनके समस्त लेखन में भी इसके अजस्र प्रवाह-प्लावन का उत्ताल परिदृश्य सहज ही दृष्टिगत हो जाता है। जिस हिंदी को उन्होंने न माता के आँचल में सुना या सीखा और न वद्यालय में गुरु के चरणों में बैठकर पढा, फर भी वह भाषा उनकी लेखनी की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एकमात्र अ भव्यक्ति-शक्ति बन गई, जानकर बेहद अद्भुत लगता है। उपर्युक्त सन्दर्भ में श्री सोहन लाल शास्त्री की यह टिप्पणी सचमुच सान्द भ्रक है, अस्तु, "उस काल में पंजाब में स्वामी दयानन्द द्वारा स्था पत आर्यसमाज का बोलबाला था, और उसी के ही प्रभाव ने श्री सन्तराम जी के मन में हिंदी, हिन्दू और हिन्दुतान के लए असीम प्रेम अंकुरित कया। तब उन्होंने उर्दू और फारसी के साथ बी.ए. कर चुकने के बाद हिंदी में प्रवेश कया और अपने परिश्रम और लगन कारण पंजाब के मूर्धन्य लेखकों में गने जाने लगे।"[vii]

सन्तराम बी.ए. की यह त्रि-साधना मात्र उनका शौक नहीं थी, और न ही उनका व्यवसाय या जीवनवृत्ति थी, अ पतु ये तो एक सच्चे देशभक्त, उत्तम सामाजिक एवं प्रबुद्ध नागरिक की भागीरथी सुचेष्टा थी, जो देश, समाज एवं देश की राष्ट्र-भाषा के उत्थान में निस्संशय महत्वपूर्ण सद्ध हुई। देश की वर्तमान उल्लासपूर्ण एवं स्वतंत्र परिस्थितियाँ उनकी मेधा व उद्य मता की निःसन्देह ऋणी हैं और समस्त राष्ट्र उनके पुरषार्थ पर सर्वदा-सर्वथा गर्व करता रहेगा।

संदर्भ सूची:-

[i] सन्तराम बी.ए., मेरे जीवन के अनुभव, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, पुनर्प्रकाशन 2008, पृष्ठ 98
[ii] सन्तराम बी.ए., मेरे जीवन के अनुभव, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, पुनर्प्रकाशन 2008, पृष्ठ 97
[iii] सन्तराम बी.ए., मेरे जीवन के अनुभव, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, पुनर्प्रकाशन 2008, पृष्ठ 94
[iv] सन्तराम बी.ए., हमारे बच्चे, व. वै. शो. संस्थान, हो शयारपुर, 1950, पृष्ठ 12
[v] सन्तराम बी.ए., हमारा समाज, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 2007, पृष्ठ 7
[vi] सन्तराम बी.ए., सेवा-कुंज, व. वै. शो. संस्थान, हो शयारपुर, 1958, पृष्ठ 40
[vii] डॉ. वेदप्रकाश सम्पादक, वश्व ज्योति पत्रिका, सतंबर 1988, साधु आश्रम, हो शयारपुर, पृष्ठ 79